गुज़रे लम्हों को सलाम

जब कभी मैं,
निहारता हूँ जीवन को,
देखता हूँ, पीछे मुड़कर,
गुज़श्ता वक्त को,
तब हर बार यही सोचता हूँ कि-
सब ठीक तो गया न?

मुझे अक्सर वक़्त के उस ढेर में,
नज़र आते हैं वे लम्हे,
जो सबके लिए जिये।

वे लम्हे जो जीये, परिवार के लिए,
वे भी जो अपनों और दोस्तों को दिए,
वे लम्हे जो बीते रिश्ते और उनकी
ज़िम्मेदारियाँ निभाने में।

उस ढेर में दिख जाता है वक़्त,
जो बच्चों की ख़ातिर गुज़रा।
उसी ढेर में दबे दिखते हैं
वे अरमान भी, जो अधूरे रह गए,
अपनों के लिए जीने के कारण।

बहुत बड़े से उस ढेर में,
मिल जाते हैं वे लम्हे भी,
जो लेकर तो आये थे,
न जाने कितने सुख, खुशियां,
ऐशो-आराम और मौज,
लेकिन वे भी पहुंच न पाए मुझ तक,
या तो उसूलों की दीवार के कारण,
और कुछ अपनों में
मशरूफियत के चलते।

आज जब देखा मैंने,
पीछे मुड़कर,
तो दौड़े आये सारे लम्हे,
खूब सारी शिकायत लेकर,
गुस्सा और चिढ़न लेकर,
नाराज़गी और कुछ कुढ़न लेकर भी

कहने लगे, तुमने हमें अपनाया नहीं,
हम भी जी न सके अपनी जिंदगी,
तुम्हारे कारण।

पर अब तो बच्चे बड़े हो गए तुम्हारे
अपनों की ज़िम्मेदारियाँ भी
अब तो कम हो ही गईं हैं।
अब तो जी लो हमें,
या लाओ दे दो हमें भी
थोड़ी खुशियाँ, थोड़ा वक़्त,
थोड़ा आनंद या वो प्यार,
जो तुमको उन अपनों ने दिया,
तुम जिये जिनके लिए।
या जो दिया तुम्हारे बच्चों ने।

लेकिन मैं क्या दूँ, उस गुज़रे वक़्त को,
कैसे चुकाऊं उनको त्याग का मोल।
मेरी जेब औ मेरी हथेलियां तो खाली हैं।

-न्यायाधिपति गोपाल कृष्ण व्यास
अध्यक्ष-मानवाधिकार आयोग, राजस्थान